छायावाद क्या है?

"स्वच्छद कल्पना वैभव की वह स्वच्छन्द प्रवृत्ति है जो देशकाल गत वैशिष्टय के साथ संसार के सभी जातियों में निरन्तर व्यक्त होती रही स्वच्छता की उस सामान्य भावधारा की विशेष अभिव्यक्ति का नाम हिन्दी साहित्य में छायावाद पड़ा।

यदि उस समय की पत्र पत्रिकाओं का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम **मुकुट घर पांडेय** ने 1920 ई0 में जबलपुर की **श्री शारदा पत्रिका** में " **हिन्दी में छायावाद** " शीर्षक से एक 4 निबन्धों की लेखमाला प्रकाशित की थी।

सरस्वती में 1921 में छायावाद शब्द प्रथम समय मिला।

विशेषता:

छायावाद व्यक्तिवाद की कविता है व्यक्तिगत अनुभूति – निर्भीकता एवं साहस दिखलाया व पहले किसी कवि में नहीं मिलता, भक्तिकाल के कवि मर्यादा में बधें रहे।

व्यक्तिक विद्रोह – सरोज स्मृति (35)

व्यक्ति प्रधान युग होने के कारण यह युग वैयक्तिक उल्लास विषाद का विषय बन गया।

व्यक्तित्व की खोज में कामायनी का मनु :

बन गुहा कुंज मरू अंचल में हूँ
खोज रहा अपना विकास।
मैं तो अबाधगति मरूत सदृश हूँ
चाह रहा अपने मन की।

व्यक्तिवाद से स्वेच्छाधारी होना मनु:

(सम्पूर्ण समाज के विरुद्ध युद्ध की घोषणा आरम्भ में प्रजातंत्र की नींव डाली, उसी ने सर्व सत्ताधारी निरंकुश शासक का पद प्राप्त कर लिया परन्तु समाज विरोध के फल स्वरूप घायल हो कर कैलास शिखर पर पलायन करना पड़ा)

प्रकृति चित्रण मे पहले के कवि जहाँ पेड़ पौधों का नाम गिनाकर अथवा स्थूल आकार का वर्णन करते परन्तु छायावादी कवि ने प्रकृति के अन्तः स्पन्दन का सूक्ष्म अंकन वृक्ष की छाया से सँास लेती छाया का स्पन्दन किया

नारी सौन्दर्य – मध्य युग के कवि नारी की जिन भौहों को कमान समझते थे छायावादी कवि के लिये :

करूण भौहों में आकाश, कपोलों में उर का मृदु भाव, श्रवण नयनों में प्रिय बर्ताव, सरल संकेतों मे संकोच, मृदुल अधरों मे मधुर दुराव ।

(सुन्दर अंगो के माध्यम से आन्तरिक भाव सौन्दर्य का आभास)

नारी की लज्जा का चित्रण कनक – किरण के अन्तराल में लुक–छिपकर चलने वाले लाज मेरे सौन्दर्य। कामायनी मे लज्जा का जो भव्य चित्रण हुआ है वह सम्पूर्ण साहित्य में अद्वितीय है।

प्रसाद जी ने सौन्दर्य को **'उज्वल वरदान चेतना।**

भावुकता एवं निराशा – सामाजिक विद्रोह न होकर व्यक्तिक विद्रोह के कारण हताशा निराश 1. मनु की चिन्ता 2 स्कन्दगुप्त का अवसाद, प्रसाद के झरना का विषाद, आँसू।

कल्पनाशीलता – निराला के कविता को कल्पना के कानन की रानी कहा पंत ने पल्लव की कविताओं को कल्पना के विहल बाल रागशक्ति एवं बोधशक्ति की दोनो ही कल्पना थी।

2. श्रद्धा का यह सोचना एवं संध्या की लाली में एक छाया मूर्ति का प्रकटीकरण श्रद्धा के हृदय में लज्जा की भावाना तुम्हारे हृदय और मन में होने वाले परिवर्तन (पूर्व) का कारण मैं ही हूँ।

लज्जा – एक मार्ग दर्शन
सौन्दर्य का पालन करने वाली,
देव सृष्टि में काम की पत्नी " रति " के नाम से जानी जाती हूँ
कपोलों पर लाली के रूप में आखों के अंजन के रूप मे बालों में घुघरालेपन के रूप में, मन में मरोड़ के रूप में।

कार्य और सौन्दर्य की रक्षा करना ।

कामायनी के मनु

आह, कल्पना का सुन्दर वह
जगत मधुर कितना होता
सुख स्वप्नों का दल छाया में
पुलकित हो जगता सोता

शब्द चयन:–
मधुमय बसंत जीवन बन के
वह अन्तरिक्ष हरों में
कब आये थे तुम चुपके
रजनी के पिछले पहरों में।

कथानक लज्जा सर्ग:

1. बसन्त रजनी की निर्मल चादनी में
मनु और श्रद्धा का मिलन
मनु का प्रलय निवेदन एवं
श्रद्धा में होने वाला परिवर्तन
उन्माद होना नयनों मे रोमांच होना,
बाकपना भरना, जादू होना,
होंठों पर हंसी छाना
सब कुछ स्वप्न बन जाना,
यौवन अभिलाषाओं से सम्पूर्ण होना

संक्षिप्त समीक्षा – श्रद्धा–लज्जा का वार्तालाप श्रद्धा जैसे मनोभाव का सम्यक निरूपण एवं नारी जीवन का चित अंकित।

नारी जीवन की अन्तर्बाह्य स्थितियों जैसे प्रेम के कारण उत्पन्न अन्तःकरण की मनोवृत्तियो, नारी के सुकुमार अंगों का परिवर्तन का वर्णन, लज्जा जैसे मनोभाव का विशद वर्णन रूपों, व्यापारों चेष्टाओं का वर्णन, भाषा लाक्षणिक, प्रतीकात्मक एवं अलंकारिक उद्देश्य,नारी के गौरव का स्थापना नारी के त्याग बलिदान एवं प्यार की स्थापना नारी के द्वारा पुरूष को महान बनाना।

इसे प्रसाद जी ने काशी नागरी प्रचारणी सभा में पढा था।

प्रसाद ने सौन्दर्य को चेतना या चित्तशक्ति का उज्जवल वरदान कहकर सौन्दर्य की व्याख्या की यह सौन्दर्य सात्विक वरदान से प्राप्त होता है और प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त नहीं होता है।

मैं उसी चंपल की छवि हूँ।

सौन्दर्य की देखभाल करती हूँ जैसे छायमाँ अपने बच्चे की रक्षा करती है विभिन्न बाधाओं, बुरी आदतों से छुटकारा दिलाती है।

मैं देव सृष्टि की रति रानी
निज पंचवाण से वंचित हो,
बन आवर्जना मूर्ति दीना
अपना अतृप्ति सी संचित हो।

प्रलय से पहले देव सृष्टि में काम की पत्नी रति के नाम परित्याग की दीनता भरी हुयी मूर्ति, विनाश के कारण अतृप्ति की संचित मूर्ति हूँ पंचवरण – सम्मोहन, उन्मादन, स्तम्भन, शोषण और तापन कहलाते हैं।

अवशिष्ट रह गई अनुभव से
अपनी अतीत असफलता सी,
लीला विलास की खेद भरी
अवसाद मयी श्रम दलिता सी।

दलता सी पार्थिव शरीर नहीं है केवल भवना के रूप में शेष बची हूँ इसलिये हृदय से अनुभव मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ नवयुतियों के मनो विकारों पर नियंत्रण मैं पैरों में घुंघरू की तरह जगाती हूँ।